फरीदाबाद

मजदूर समाचार

जीवन की लौ को सृजनात्मक तौर पर प्रचुर करने का एक माध्यम

नई सीरीज नम्बर 283 1/- जनवरी 2012

'मजदूर समाचार' की कुछ सामग्री अंग्रेजी में इन्टरनेट पर है। देखें–
< http://faridabad majdoorsamachar.blogspot.com >

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी. फरीदाबाद – 121001

उल्लास है उदासी-अवसाद का उपचार

हर कोई खुशी, प्रसन्नता, प्रफुल्लता, आनन्द, हर्ष, उल्लास चाहती-चाहता है। हम अवसर ढूँढते हैं, मौके रचते हैं हँसी-ठिठौली के। चाहें तो इसे मानव योनि का स्वभाव कह सकते हैं।

जब-जब हम लेन-देन के रिश्तों से बाहर जाते हैं, जब-जब हम हिसाब-किताब भूलते हैं तब-तब हम मगन हो जाते हैं। छुपम-छुपाई खेलते बच्चे। बच्चों के साथ बच्चे बनते बड़े। युवा हों चाहे वृद्ध, लंगोटियों की टोली मिलने पर। ऐसी निकटता कि एक-दूसरे को हँसाने की तरकीबें बनाते हैं। विश्व-भर में प्रसन्नता की बहुत बातें हैं।

लेकिन बन्दिशें हैं। व्यवधान हैं। वह आ रहा है – हँसी बन्द। साहब को देखते ही खुशी गायब। धीर-गम्भीर भद्र लोग : क्या दाँत निकाल रहे हो..

कितने बेचारे थे राजा कि हँसाने के लिये दरबार में मसखरे रखने पड़ते थे। कितनी दयनीय है आज सिर-माथों के शिखर पर बैठने वालों की स्थिति कि लाफ्टर चैनल आवश्यक बन गये हैं।

अमरीका में रुपये-पैसे के एक प्रतीक पर कब्जा करने से आरम्भ हुआ कब्जा अभियान दुनिया में कई स्थानों को रंगीन बना रहा है। नाचते-गाते, हँसी-खुशी से सराबोर, उल्लास से भरे हजारों लोगों का हुजूम कब्जा अभियान को एक नई दुनिया के लिए दस्तक दर्शा रहे हैं।

गुड़गाँव में मानेसर में मारुति सुजुकी कार फैक्ट्री पर पाँच महीने में दूसरी बार मजदूरों का कब्जा : "7 से 14 अक्टूबर के दौरान मारुति सुजुकी फैक्ट्री के अन्दर बहुत-ही बढिया समय रहा। न काम की टेन्शन। न आने-जाने का तनाव। न बस पकड़ने की चिन्ता। न खाना बनाने की टेन्शन। न खाना खाने की चिन्ता कि 7 बजे ही खाना है या 9 बजे ही खाना है। न इस बात की टेन्शन कि आज कौन-सा दिन है और कौन-सी तारीख चल रही है। निजी बातें बहुत होती थी। एक-दूसरे के इतने करीब कभी नहीं आये जितने इन 7 दिनों में आये।" इस पर एक अन्य फैक्ट्री में काम करता मजदूर बोला : "मशीनी जिंदगी है। इतने बजे उठना। इतने फिक्स टाइम नहाना-धोना, नाश्ता, तैयार होना। बिल्कुल एक बाल्टी-दो बाल्टी में नहाना, बिल्कुल हिसाब है, कम-ज्यादा नहीं होता। बनाना, नाश्ता करना, डिब्बे में रखना, बस पकड़ने के लिए पैदल चलना, इतने समय में पहुँच ही जाना। अगर दस मिनट भी ज्यादा सो लिए तो स्पीड बढ जाती है, हर चीज का समय एक-दो मिनट घट जाएगा। सोचते हैं कम सोयें...... पूँजीवादी उत्पादन प्रक्रिया मजदूरों के जीवन को बाँध देती है। फैक्ट्री पर मजदूरों के कब्जे ने जीवन को उनमुक्त कर दिया, खोल दिया। इससे बडी चीज क्या होगी।" एक अन्य मजदूर ने कहा, "फैक्ट्री पर मजदूरों का कब्जा आम श्रमिक शोषित जन वर्ग के जीवन का नया आयाम है। नई प्रक्रिया की शुरुआत है। यह मजदूर वर्ग की मुक्ति का मार्ग प्रशस्त कर सकता है।" (बाकी पेज तीन पर)

प्रगति और विकास लिये हैं उदासी-हताशा-विषाद-अवसाद

ऊँच-नीच आमतौर पर और मण्डी-मुद्रा आधारित ऊँच-नीच विशेषकरके जीवन को अर्थहीन बनाती है। कथित उन्नति की खिल्ली नहीं उड़ा सकते – हम सब विभिन्न स्तरों पर उसके रंग में रंगे हैं। लेकिन, खिल्ली उड़ाना, दूसरों पर हँसना, परपीड़ा आनन्द ऊँच-नीच वाली समाज व्यवस्थाओं में व्यापक होता है। घुटन-कुँठा, तन और मन की पीड़ा के काबू से बाहर होने पर पहले भूत-प्रेत चढना, पागल होना कहते थे और आज मनोरोग कहते हैं। पहले उपचार के नाम पर थान-मजार थी और आज मनोचिकित्सक हैं। पहले के विकृत समुदाय ही बहुत दर्द पहुँचाते थे, इधर मण्डी-मुद्रा से जुड़ी समुदायहीनता (अकेलापन) महामारी बना है।

●आज विश्व में दो में से एक युवा मानसिक रोगों का शिकार है। दस से चौबीस वर्ष आयु की आधी आबादी अवसाद, शराब की लत, खंडित मन-विभाजित व्यक्तित्व, मन के अतिरेकों से पीड़ित है। ●प्रगति और विकास का पहिया चलता रहा तो सन् 2020 तक मानसिक रोग विकलांगता-अशक्तता-अयोग्यता के सबसे बडे कारण होंगे। ● एम्स की एक प्रोफेसर के अनुसार आज भारत में बीस प्रतिशत बच्चे एक अथवा दूसरी प्रकार की मानसिक गड़बड़ी लिए हैं। ● विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार भारत में 35.9 प्रतिशत आबादी कुछ समय तक गंभीर अवसाद से पीड़ित रहती है..... विश्व में भारत डिप्रेशन-अवसाद की राजधानी है। ● दस वर्ष के अध्ययन के पश्चात लेखिका शैफाली संध्या कहती हैं: –शहरों में पढी-लिखी पत्नियों में 72 प्रतिशत हल्के से भारी अवसाद से ग्रसित हैं। –अच्छी छवि दिखाने के लिए शहरों में दो-तिहाई पति-पत्नी विवाहित जीवन में खुश हैं का ढोंग करते हैं। –भारत की आई.टी. राजधानी कहलाती बेंगलुरु में एक चिकित्सालय ने पाया है कि गर्भवती महिलाओं में से आधी की लात-घूँसों से पिटाई होती है, चिल्लाकर डाँटी जाती हैं, जबरन यौन सम्बंध झेलती हैं। ● इन बीस वर्षों में भारत में तलाक की दर में दस गुणा वृद्धि हुई है। ● राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के अनुसार भारत में वर्ष 2009 में 1,27,151 आत्महत्याओं की सूचना दर्ज की गई। एक मित्र के अनुसार इन 5-6 महीनों में आस-पास की दो-तीन गलियों में 5 बच्चों व युवा मजदूरों ने आत्महत्या की पर सब की सामान्य मृत्यु दर्शायी गई। एक सौ घरों के एक छोटे गाँव में दो ने आत्महत्या की – सामान्य मृत्यु दिखाई गई। लोग जानते हैं पर आत्महत्या को सामान्य मौत दिखाने की व्यापक सहमति है क्योंकि अन्यथा पुलिस से बहुत लफड़ा रहता है।

प्रगति और विकास की एक झलक ही बहुत डरावनी है परन्तु प्रचार-प्रसार-चमक-रोगन द्वारा पैदा की जाती चाहतों वाले मनहूस माहौल को बढती हँसी-खुशी झकझोर रही है। ट्युनिशिया में हर्ष की लहर के सम्मुख विषाद का प्रतीक राष्ट्रपति भाग गया। उल्लास की ऊँचाई ने मिश्र में राष्ट्रपति को कारागार में पहुँचा कर सेना को हिलाना आरम्भ कर दिया है। लीबिया में हँसी-खुशी की उभरती लहर प्रतीक मिटाने-नया प्रतीक बनाने में फँस गई-फँसा दी गई है। यमन में हर्ष का बवंडर उमड़-घुमड़ रहा है।

यूनान में हर्षोल्लास को थामने-बाँधने वाले प्रयास ताश के पत्तों के महलों की तरह ढह रहे हैं। इटली में प्रधान मंत्री इस्तीफा दे कर मुकदमों का सामना कर रहा है। फ्राँस में राष्ट्रपति डाँवाडोल है। जापान में एक की जगह लेता दूसरा प्रधान मंत्री शीघ्र ही तीसरे के लिए कुर्सी खाली कर रहा है। इंग्लैंड में दस-बारह वर्ष के बच्चे विद्रोह की अगली कतारों में।

गुड़गाँव-फरीदाबाद में मजदूर

●**हरियाणा सरकार** द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन इस प्रकार हैं : *अकुशल मजदूर (हैल्पर) 4644 रुपये (8 घण्टे के 179 रुपये); अर्ध-कुशल ब 4904 रुपये (8 घण्टे के 189 रुपये); कुशल श्रमिक ब 5164 रुपये (8 घण्टे के 199 रुपये); उच्च कुशल मजदूर 5294 रुपये (8 घण्टे के 204 रुपये)।* इस सन्दर्भ में 25-50 पैसे के पोस्ट कार्ड डालने के लिये एक पता : श्रम आयुक्त, हरियाणा सरकार, 30 बेज बिल्डिंग, सैक्टर-17, चण्डीगढ।

ईस्टर्न मेडिकिट मजदूर : "उद्योग विहार, गुड़गाँव स्थित कम्पनी की फैक्ट्रियों में स्थाई मजदूरों की तनखा भी देरी से देने लगे हैं – नवम्बर की 13 दिसम्बर को दी। कैजुअल वरकर तो हर महीने कुछ करते हैं तब तनखा दी जाती है। प्लॉट 292 फेज-2 स्थित फैक्ट्री में कैजुअलों ने 21 दिसम्बर को दोपहर 2 बजे काम बन्द किया तब 6-7 बजे इमरजैन्सी लाइट जला कर नवम्बर की तनखा दी। मजदूरों पर नियन्त्रण कायम रखने के लिये प्लॉट 196 फेज-1 स्थित फैक्ट्री में कम्पनी ने पुलिस बुला ली। आज 24 दिसम्बर तक सब मजदूरों को नवम्बर की तनखा नहीं दी है। ईस्टर्न मेडिकिट की हर फैक्ट्री में डी-कैटेगरी नाम के मजदूर भी हैं जो वर्षों से सुबह 6 से साँय 6½ तथा सुबह 8 से रात 8½ की शिफ्टों में काम करते हैं पर उनकी पी.एफ. नहीं है।"

एडिगियर इन्टरनेशनल श्रमिक : "प्लॉट 189 सैक्टर-4 आई.एम.टी. मानेसर स्थित फैक्ट्री में रोज सुबह 9½ से रात 1 बजे तक 700 मजदूर **एडिडास, पूमा, रीबोक** के लिये सिले कपड़े तैयार करते हैं। जबरन रोकते हैं। जनरल मैनेजर कार्ड छीन लेता है। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। अक्टूबर और नवम्बर की तनखायें 15 दिसम्बर तक नहीं दी तो सुबह 9½ बजे मजदूरों ने काम आरम्भ नहीं किया। काम बन्द हुये दोपहर का 1 बज गया तब कम्पनी द्वारा रखे 7 पी एस ओ (छह फुटे पहलवान) गुण्डागर्दी करने लगे। इस पर सब मजदूर फैक्ट्री से बाहर निकल गये। कम्पनी ने 3 दिसम्बर को पुलिस बुलाई थी जब नौकरी छोड़ गये मजदूर अगस्त की तनखा लेने पहुँचे थे।"

क्लच ऑटो कामगार : "12/4 मथुरा रोड, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में नवम्बर की तनखा 14 दिसम्बर तक नहीं दी तो मजदूरों ने उप श्रमायुक्त को घेरा। कम्पनी घाटा बता रही है। थोड़े-थोड़े कर 16 को तनखा देनी शुरू की और आज 19 दिसम्बर तक सब मजदूरों को नहीं दी है।"

सुरक्षा कर्मी : "मानेसर में ई.एस.आई. ऑफिस के ऊपर शाखा कार्यालय वाली एस आई एस सेक्युरिटी का अमूल डेरी में 26 गार्ड रखने का ठेका था। साँय 6 से रात 3 बजे तक ड्युटी – गाड़ियों में दूध लादा जाता। रोज 9 घण्टे ड्युटी पर 30 दिन के 4500 रुपये, ई.एस. आई. व पी.एफ. काट कर। तनखा देरी से, 20 तारीख को देते। गार्ड भाग जाते। छोड़ने पर किये काम के पैसों के लिये बहुत परेशान करते हैं। मैंने सितम्बर 10 में नौकरी छोड़ी और अब दिसम्बर 11 तक मुझे 17 दिन की ड्युटी के पैसे बार-बार माँगने पर भी नहीं दिये हैं। तीन महीने बाद आना, अमूल डेरी से चेक नहीं मिला है, इस्तीफा लिखो, ठेका टूट गया है – फाइनल सैटलमेन्ट होगा तब..... फण्ड का फार्म बाद में भर देने की बातें।"

उषा अमर फोर्स मैटल वरकर : "486-87 उद्योग विहार फेज-3, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में कार्यरत 35 स्थाई मजदूरों की यूनियन का पंजीकरण मार्च में आया। सवा सौ कैजुअल वरकरों को घटा कर कम्पनी ने अप्रैल से 20-25 कर दिया है। यूनियन ने माँग-पत्र दिया, उस पर सुनवाई नहीं। दिवाली पर उप श्रमायुक्त के सम्मुख 20% बोनस पर हस्ताक्षर किये पर स्थाई मजदूरों को 10% दिया और कैजुअलों को 3500 रुपये। तीन शिफ्ट थी – दो महीने से एक, जनरल शिफ्ट कर दी है।"

पी एण्ड जी मजदूर : "प्लॉट 9 सैक्टर-6 आई. एम.टी. मानेसर स्थित फैक्ट्री में चमड़े के जैकेट बनाते 400 मजदूरों की सुबह 10 से रात 8 की ड्युटी रोज है और फिर रात 10, रात 1 बजे तक रोक लेते हैं। हर शनिवार को 18 घण्टे काम। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। रात 10 के बाद काम पर रोटी के लिये 50 रुपये देते हैं। हैल्परों को तनखा बताते 4650 हैं पर देते 4000 रुपये हैं। इसी प्रकार कारीगरों को बताते 7000-7500 हैं और देते 5000-6500 रुपये हैं। ई.एस. आई. कार्ड 10-15 मजदूरों के पास ही हैं। नौकरी छोड़ने पर फण्ड के पैसे मजदूरों को नहीं मिलते।"

ग्लोब कैपेसिटर श्रमिक : "30/8 इन्डस्ट्रीयल एरिया, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में 200-250 मजदूरों की ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं और 750 की नहीं हैं। जिन 750 मजदूरों की ई.एस.आई. व पी. एफ. नहीं हैं उन्हें प्रतिदिन 10½ घण्टे ड्युटी पर 30 दिन के 5200 रुपये देते हैं। इन 10½ घण्टे ड्युटी के अतिरिक्त रोज 2 घण्टे को ओवर टाइम कहते हैं और उन दो घण्टे के 35 रुपये देते हैं। सुबह 8 से रात 8½ और रात 8 से अगली सुबह 8 तक की दो शिफ्ट हैं – रात को भोजन अवकाश नहीं होता। रविवार को दिन में 10½ घण्टे ही काम – शनिवार रात वालों को सुबह 7 बजे छोड़ देते हैं और वे 8½ से फिर काम में लग जाते हैं। इधर 6 महीने से महिला मजदूर रख रहे हैं, इस समय 80 हैं, सुबह 8½ से साँय 7 की ही शिफ्ट है, ई.एस. आई. नहीं, पी.एफ. नहीं, 10½ घण्टे रोज काम पर 30 दिन के 5200 रुपये।"

चिन्दू क्रियेशन कामगार : "295 उद्योग विहार फेज-2, गुडगाँव स्थित फैक्ट्री में 200 मजदूर रोज सुबह 9 से रात 10 बजे तक काम करते हैं, कभी-कभी रात 1 तक रोक लेते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। ई.एस.आई. के पैसे सब की तनखा से काटते हैं और ई.एस. आई. कार्ड देते हैं। लेकिन, पी.एफ. किसी मजदूर का नहीं है। डायरेक्टर गाली देता है, मारपीट भी। यहाँ **जोर्ज** आदि के कपड़े बनते हैं।"

विनय ऑटो वरकर : "प्लॉट 42 सैक्टर-3 आई.एम.टी. मानेसर स्थित फैक्ट्री में 200 स्थाई मजदूर और तीन ठेकेदारों के जरिये रखे 400 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में **नपिनो, डेन्सो, जे एन एस, प्रिकॉल, डेल्फी** के हिस्से-पुर्जे बनाते हैं। रविवार को शिफ्ट बदलती है तब प्लास्टिक मोल्डिंग विभाग और पीतल वाली प्रेस शॉप में शनिवार को रात 8 बजे लगे मजदूर 20 घण्टे ड्युटी करने के बाद रविवार को साँय 4 बजे छूटते हैं। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। ठेकेदारों के जरिये रखे नये हैल्पर की तनखा 4500 रुपये।"

ध्रुव ग्लोबल मजदूर : "14 मथुरा रोड, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में जुलाई से देय डी.ए. के पैसे अब नवम्बर वेतन में दिये हैं और वह भी 5000 रुपये से कम तनखा वालों को। रंगाई विभाग में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। सिलाई विभाग में अक्टूबर से 8 घण्टे की ड्युटी है।"

प्योग्नम श्रमिक : "666 उद्योग विहार फेज-5, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में 4000 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। जनरल मैनेजर बहुत गाली देता है, महिला मजदूरों के साथ दुर्व्यवहार करता है।"

रोलैक्स कामगार : "प्लॉट 24 सैक्टर-4 आई.एम.टी. मानेसर स्थित फैक्ट्री में सुबह 9 बजे काम आरम्भ होता है और सिलाई कारीगरों को रात 1 बजे छोड़ते हैं तथा फिनिशिंग विभाग में अगली सुबह 4-6 बजे तक रोक लेते हैं। तीन महीने से हर महीने 200 घण्टे से ज्यादा ओवर टाइम। रोटी के लिये 17 रुपये ही देते हैं। दो सौ घण्टे हों तब भी सिर्फ 180 घण्टे ओवर टाइम के पैसे देते हैं और वह भी मात्र 15 रुपये प्रतिघण्टा। ई.एस. आई. व पी.एफ. बहुत कम मजदूरों के – जाँच वाले आये तब 70 को ही फैक्ट्री में रहने दिया और 450 को बाहर निकाल दिया था। तीन ठेकेदारों के जरिये रखे कटिंग वालों को 12 घण्टे रोज पर 30 दिन के 5500 रुपये और धागे काटने वालों को 4000 रुपये, सिलाई कारीगर पीस रेट पर। तनखा देरी से, नवम्बर की 15 दिसम्बर को दी। यहाँ **सी के जी, बेनटॉन, चिकोस** का माल बनता है।"

स्टार वायर वरकर : "मथुरा रोड, फरीदाबाद में नहर के पास स्थित फैक्ट्री में 100-150 स्थाई मजदूर, 1500 कैजुअल वरकर और आठ-दस ठेकेदारों के जरिये रखे 1500-1600 मजदूर पुलिस, फौज आदि के लिये स्टील का सामान बनाते हैं। स्थाई मजदूरों की तनखा 6-8 तारीख को पर बाकी सब को देरी से, कुछ ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को नवम्बर की तनखा आज 17 दिसम्बर तक नहीं दी है। तीन शिफ्ट हैं : 9½, 11½ और 12 घण्टे की। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। हैल्परों की तनखा 4500 रुपये। पी.एफ. सिर्फ स्थाई मजदूरों का है।"

अन्नु ऑटो मजदूर : "प्लॉट 52 सैक्टर-3 आई.एम.टी. मानेसर स्थित फैक्ट्री में 30-35 स्थाई मजदूर और तीन ठेकेदारों के जरिये रखे

गुड़गाँव...(पेज दो का शेष)

300 से ज्यादा वरकर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में **होण्डा, हीरो, हुन्डई** के प्लास्टिक के हिस्से-पुर्जे बनाते हैं। रविवार को दिन में 12 घण्टे ही काम। ओवर टाइम के मात्र 18 रुपये प्रतिघण्टा। गड़बड़ी कर हर महीने 200-400 रुपये खा जाते हैं। छोड़ने पर कुछ मजदूरों को ही फण्ड के पैसे मिलते हैं। भोजन के लिये फैक्ट्री में स्थान नहीं है और पार्क सिर्फ देखने, फोटो खींचने के लिये है – वहाँ बैठ नहीं सकते। शौचालय बहुत गन्दा रहता है।''

ए आर सी मशीन टूल्स श्रमिक : '' कारखाना बाग, 16/5 मथुरा रोड, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में 200 से ज्यादा मजदूर **यूनिपास** नोएड़ा और **गैब्रियल** गुड़गाँव के लिये शॉकर की रॉड बनाते हैं। रविवार को दिन में 12 घण्टे ही काम। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। हैल्परों की तनखा 3500 रुपये। ई.एस.आई. व पी.एफ. 20-25 मजदूरों के ही हैं।''

ओरियन्ट क्राफ्ट कामगार : ''प्लॉट 15 सैक्टर-5 आई.एम.टी. मानेसर स्थित फैक्ट्री में 6 महीने पहले कम्पनी ने मजदूरों को साइकिलें देने की घोषणा की थी। चार ठेकेदारों के जरिये रखे 3000 मजदूरों के लिये यह नहीं थी। कम्पनी द्वारा स्वयं भर्ती और एक वर्ष से अधिक समय से कार्य कर रहे 200 मजदूरों के फार्म पर हस्ताक्षर करवाये। साइकिलें नहीं दी हैं। सुबह 9½ से साँय 6 की शिफ्ट है पर सप्ताह में 3-4 रोज रात सवा बजे तक रोकते हैं। ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से है पर दिन में प्रोडक्शन मैनेजर गाली देता है और रात को मास्टर दारू पी कर गाली देता है।''

केनमोर विकास वरकर : ''19/6 मथुरा रोड, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में 6 स्थाई मजदूर और तीन ठेकेदारों के जरिये रखे 200 वरकर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में अल्युमिनियम के पुर्जे बना कर **सेन्डेन विकास** की राह **मारुति सुजुकी** भेजते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। बैठ नहीं सकते, खड़े-खड़े काम करना पड़ता है। ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को बोनस नहीं, सवेतन छुट्टी नहीं, कैजुअल छुट्टी नहीं और डी. ए. की कुछ माह की राशि खा जाते हैं – जुलाई से देय महँगाई भत्ता अक्टूबर से लागू किया। पता नहीं किस हिसाब से तनखा से ई.एस.आई. के नाम पर 120 रुपये काटते हैं। मास्क नहीं, एपरन नहीं, साबुन नहीं – हाथ धोने के लिये साबुन घर से ले जाना पड़ता है।''

श्रीराम इंजिनियर्स मजदूर : ''प्लॉट 54 सैक्टर-5 आई.एम.टी. मानेसर स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में 250 मजदूर **मारुति सुजुकी** कार और **होण्डा** मोटरसाइकिल के पुर्जे बनाते हैं। स्थाई मजदूरों को ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से और दो ठेकेदारों के जरिये रखे 100 मजदूरों को सिंगल रेट से।'' **लखानी श्रमिक :** ''प्लॉट 122 सैक्टर-24, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री से अगस्त-सितम्बर में करीब 200 मजदूरों को प्लॉट 131 में भेज दिया। पे-स्लिप में कम्पनी का नाम बदल दिया है, लखानी इण्डिया से लखानी रबड़ उद्योग। पुराना हिसाब नहीं दिया है और इधर नई भर्ती दिखा दी है। समूह की प्लॉट 265 स्थित फैक्ट्री में नवम्बर की तनखा आज 17 दिसम्बर तक नहीं।

उल्लास है उपचार...(पेज एक का शेष)

हर समय रोना-धोना, कहीं कुछ नहीं हो रहा है या फिर धूम-धड़ाके में भड़ास निकालना वाली दीवारें ढह रही हैं। सामाजिक समस्याओं के तकनीकी समाधान ध्वस्त हो रहे हैं। विकृत समुदाय और समुदायहीनता (अकेलापन) में चुनना तवे और चूल्हे में चुनने के तौर पर नकारा जा रहा है। जीवन के हर क्षेत्र में सरकारी हस्तक्षेप सरकारी डंडे की तरह लड़खड़ा रहा है। संसार में हर स्थान पर और हर समय अनेक प्रकार के समुदाय-रूपी गठन हो रहे हैं। अपर्याप्ततायें पहचानी और त्यागी जा रही हैं। हँसी-खुशी की बहार लिए नये समुदायों की बाढ विश्व में नई समाज रचना लिए है।■

मारुति सुजुकी डायरी..(पेज चार का शेष)

* क्या हुआ, कैसे हुआ यह कम्पनी को समझ में नहीं आ रहा। इसलिये मजदूरों पर जकड़ कसने से मैनेजमेन्ट डर रही है। कम्पनी पुचकारने में लगी है, मजदूरों को रियायतें दे रही है।

* दूरियाँ हैं। मैनेजमेन्ट और मजदूरों के बीच दूरियाँ रहती ही हैं। पर साहब कहते हैं कि दूरियाँ बन गई हैं, दूरियाँ मिटाओ। बड़े साहबों ने विभाग प्रमुखों से कहा है कि प्रत्येक स्थाई मजदूर और टेक्निकल ट्रेनी से निजी सम्पर्क स्थापित करो। कम्पनी से सीधे बात कहने के लिये मैनेजमेन्ट एग्जेक्युटिव अफसरों की दो मेल आई डी मजदूरों को उपलब्ध करवाई गई हैं।

* चर्चाओं, व्यापक विचार-विमर्श से घबराई प्रतिक्रिया वाली शक्तियों ने अफवाह फैलाई हुई है कि मजदूरों के फोन कम्पनी टैप कर रही है। सीधी-सी बात है कि कम्पनी और सरकार जिससे डरी हैं उसे और बढाना उनको उपयुक्त उत्तर है। भला जीभ कभी बत्तीस दाँतों के काबू में आई है ?! सितम्बर-अक्टूबर में बहुत बड़ी सँख्या में मारुति सुजुकी मानेसर मजदूर खुल कर बातें करते रहे और इसने कम्पनी तथा सरकार की कई तिकड़मों-साजिशों को धूल चटाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बहुत-ही कमजोर हैं कम्पनी और सरकार इसलिये मजदूरों के बतियाने से इतना डरती हैं।

* प्रधान और महासचिव के बाद बाकी बचे निलम्बित 28 के नौकरी छोड़ने तथा हिसाब लेने के पश्चात भी यूनियन पंजीकरण की प्रक्रिया जारी। पहले क्षेत्र के आधार पर पदाधिकारी बनाने के प्रयास। झगड़ों में उलझ गये। नये पदाधिकारी। कम्पनी को जानकारी है। सब कुछ कम्पनी की जानकारी में हो रहा है। बहुत ज्यादा भरोसा था प्रधान और महासचिव में। इधर प्रधान-प्रधान की चर्चा हुई तो बस यह देख आये कि कौन बने हैं। अब आँख बन्द कर किसी पर भी विश्वास नहीं करेंगे। हड़ताल तो कम्पनी जब चाहे तब हो सकती है पर हम लोग खूब विचार-विमर्श के बाद ही निर्णय लिया करेंगे। हिसाब लेने वालों को कम्पनी ने इसलिये पैसे नहीं दिये कि यहाँ से छोड़ जाओ। इन्हें पैसे इसलिये दिये हैं कि कम्पनी के पक्ष में हमेशा हस्तक्षेप करेंगे। यूनियन और पदाधिकारी तो अब भी इनका अखाड़ा हैं।

* ''चण्डीगढ में अपने प्रभाव का प्रयोग कर श्रमायुक्त से यूनियन का रजिस्ट्रेशन करवा दीजिये।'' ''क्या करेंगे पंजीकरण का ? आपको इसकी क्या जरूरत है ? आपने तो श्रमायुक्त को यहीं फैक्ट्री गेट पर देख लिया है।''

''वह तो है। पर फिर भी सरकार की मान्यता से मदद मिलेगी।''

''क्या मदद मिलेगी ? सरकार और कम्पनी, दोनों को आपने देख लिया है। आप अपने को 3500 से 950 क्यों करना चाहते हैं ?'' ''नहीं-नहीं, हम 3500 साथ रहेंगे।''

''कैसे ? यूनियन के सदस्य स्थाई मजदूर ही बन सकते हैं। ट्रेनी, अप्रेन्टिस, ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूर तो विधान-संविधान अनुसार यूनियन के सदस्य ही नहीं बन सकते। आपने फैक्ट्री के सब मजदूरों के बीच अनेकों तालमेलों और फैक्ट्री से बाहर के लोगों से जोड़ बना कर कम्पनी तथा सरकार को हिला दिया है। अब आप सिकुड़ना क्यों चाहते हैं ?'' ''हम किसी को छोड़ेंगे नहीं। हम ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों की माँग भी उठायेंगे। पर बातचीत के लिये कोई मान्य लोग तो हों। इसलिये यूनियन का रजिस्ट्रेशन चाहिये।'' ''इस समय कम्पनी से बातचीत करने वाले कोई लोग नहीं है। आप 3500 के बीच जोड़ और फैक्ट्री से बाहर के लाखों के आपसे जुड़ने का डर कम्पनी से यह-वह आपको दिलवा रहा है। अप्रेन्टिस, ट्रेनी, ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों के पैसे बढा दिये हैं। जो 45 सैकेण्ड में एक कार बनाना निर्धारित था उसे एक मिनट में एक कार बनाना कर दिया है। स्थाई मजदूरों की तनखा में उल्लेखनीय वृद्धि की बात कम्पनी अधिकारी कह रहे हैं। ऐसे में 950 सदस्यों वाली यूनियन और मैनेजमेन्ट से वार्ता के लिये प्रधान, महासचिव आदि में आपका क्या हित हो सकता है ? इस समय कोई नहीं है जिससे कम्पनी समझौता कर सके इसलिये सब मजदूरों को रियायतें देने को मजबूर है। ऐसे में यूनियन और नेता तो वास्तव में कम्पनी को चाहियें। आज स्थितियाँ ऐसी हैं कि आपके लाख नहीं चाहने के बावजूद यूनियन पंजीकरण, यूनियन को मान्यता स्थाई मजदूरों में सिमटने से आरम्भ हो कर नेता मण्डली तक सिकुड़ जाती है और कम्पनी का एक औजार बन जाती है आमतौर पर। होण्डा में यूनियन का उदाहरण आपके सामने है। स्थाई मजदूर, ट्रेनी, ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूर 2005 में मिल कर लड़े थे। आज स्थाई मजदूर कहलाने वाले 1800 में कई लोग सुपरवाइजरों वाले कार्य करते हैं। कम्पनी ने ट्रेनी रखने ही बन्द कर दिये। आज उत्पादन का अधिकतर कार्य करने वाले ठेकेदारों के जरिये रखे 6500 मजदूरों से यूनियन के बारे में बात कीजिये और फिर सोचिये।''■

मण्डी में दृष्टिहीन

राष्ट्रीय दृष्टिहीन संघ (NFB) की मुण्डका, दिल्ली और मुजेसर, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्रियों में 250 तथा 200 दृष्टिहीन मजदूर काम करते थे। दिल्ली सरकार और हरियाणा सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन इन मजदूरों को नहीं दिये जाते थे पर इन्हें नियम अनुसार साप्ताहिक अवकाश तथा कैजुअल छुट्टी मिलती थी और 8 घण्टे की ड्युटी पर महीने के 3300 रुपये। ई.एस.आई. तथा पी.एफ. नहीं थी। अप्रैल-जून 2011 के दौरान इन फैक्ट्रियों से कई मजदूरों को नौकरी से निकाला गया। आठ घण्टे की ड्युटी के बाद काम के लिये रोका जाने लगा और उस अतिरिक्त समय का कोई भुगतान नहीं। फिर 9 नवम्बर को मैनेजमेन्ट ने सूचना दी कि आगे से घण्टों के अनुसार मेहनताने की बजाय उत्पादन की मात्रा के मुताबिक पैसे दिये जायेंगे। दृष्टिहीन मजदूरों ने हिसाब लगाया कि मैनेजमेन्ट के नये तरीके से उन्हें 12 घण्टे रोज ड्युटी पर महीने के 2600 रुपये बनेंगे। मैनेजमेन्ट के विरोध में मजदूरों ने काम बन्द कर दिया।

तालमेल बढा कर, 24 नवम्बर को दिल्ली में पुष्प विहार स्थित राष्ट्रीय दृष्टिहीन संघ के मुख्यालय पर 400 नेत्रहीन मजदूरों और समर्थकों द्वारा धरना-प्रदर्शन। मजदूरों के अनुसार राष्ट्रीय दृष्टिहीन संघ का घोषित लक्ष्य, "नेत्रहीनों का नेतृत्व नेत्रहीनों द्वारा", वास्तव में "नेत्रहीनों का शोषण नेत्रहीनों द्वारा" है। राष्ट्रीय दृष्टिहीन संघ के उच्च पदों पर नेत्रहीन व्यक्ति आसीन हैं।

मुख्यालय पर धरना-प्रदर्शन से समस्याओं का समाधान नहीं होने पर 28 नवम्बर से दिल्ली में जंतर-मंतर पर धरना आरम्भ किया। "विश्व विकलांगता दिवस" पर 3 दिसम्बर को संसद मार्ग पर प्रदर्शन और प्रतिनिधिमण्डल ने भारत सरकार के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री से मुलाकात की। दृष्टिहीन मजदूरों को राहत नहीं मिली। जंतर-मंतर पर क्रमिक अनशन। बड़ा प्रदर्शन 21 दिसम्बर को। शास्त्री भवन स्थित सामाजिक न्याय मंत्रालय पर 2 जनवरी को धरना।

राष्ट्रीय दृष्टिहीन संघ मैनेजमेन्ट ने 4000-5000 रुपये तनखा में कुछ नये मजदूर भर्ती किये हैं।

अन्धी होती है मण्डी और काणा होता है न्याय।■

दिल्ली में मजदूर

पहली जनवरी को समाचारपत्रों में दिल्ली सरकार का विज्ञापन : 1 अक्टूबर 2011 से दिल्ली में न्यूनतम मजदूरी की दरें इस प्रकार हैं — अकुशल श्रमिक को मासिक 6656 रुपये (8 घण्टे के 256 रुपये); अर्ध-कुशल श्रमिक को मासिक 7358 रुपये (8 घण्टे के 283 रुपये); कुशल श्रमिक को मासिक 8112 रुपये (8 घण्टे के 312 रुपये)। स्टाफ में दसवीं से कम को मासिक 7358 रुपये (8 घण्टे के 283 रुपये); दसवीं उत्तीर्ण को मासिक 8112 रुपये (8 घण्टे के 312 रुपये); स्नातक और अधिक को मासिक 8814 रुपये (8 घण्टे के 339 रुपये)।

विज्ञापन में दिल्ली सरकार यह भी कहती है कि मजदूरी का भुगतान अनिवार्य रूप से चेक द्वारा अथवा मजदूर के बैंक खाते में सीधे भेजा जाना चाहिये।

विज्ञापन में दिल्ली सरकार कहती है कि सभी मजदूरों को 1 अक्टूबर 2011 से संशोधित न्यूनतम मजदूरी दी जायेगी। उल्लंघनकर्त्ता कम्पनी-मैनेजमेन्ट-नियोक्ता को दंडित किया जायेगा और मजदूर के खाते में मजदूरी का दस गुना भुगतान करना होगा! अधिक जानकारी के लिये दिल्ली सरकार की वेबसाइट देखें <labour.delhigovt.nic.in> वैसे, 4 जनवरी को भी इस वेबसाइट पर पुराने न्यूनतम वेतन ही दर्ज थे।

सामान्य डाक के लिये पता : श्रम विभाग, दिल्ली सरकार, 5 शाम नाथ मार्ग, दिल्ली — 110054

इस युग में सरकारों की कथनी और करनी कुछ ज्यादा ही बेमेल हैं फिर भी, दिल्ली सरकार द्वारा विज्ञापन में मुफ्त में फोन करने के लिये दिये नम्बर 12789 पर मजदूरों द्वारा फोन करना बनता है। इस सन्दर्भ में मजदूरों द्वारा पच्चीस/पचास पैसे के पोस्ट कार्ड श्रम विभाग, दिल्ली सरकार को डालना भी बनता है। वैसे, दिल्ली में फैक्ट्रियों में काम कर रहे जिन बीस-पच्चीस प्रतिशत मजदूरों को सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन दिया जाता है उनमें अकुशल के 702 रुपये, अर्ध-कुशल के 780 रुपये, कुशल के 858 रुपये तो अक्टूबर से दिसम्बर के दौरान के बकाया हो गये हैं।

तनखा का चेक से या बैंक खाते में भुगतान तो दिल्ली में फैक्ट्रियों में काम करते दस प्रतिशत मजदूरों का भी नहीं होता। दिल्ली में फैक्ट्रियों में काम करते जिन पचहत्तर-अस्सी प्रतिशत मजदूरों को सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन नहीं दिया जाता उन्हें भी मुफ्त फोन और पोस्ट कार्ड डालने के काम तो करने ही चाहियें। यूँ भी, बहुत-कुछ जो सब मजदूर करते ही रहते हैं उसे और बढाना बनता है। तन-मन-मस्तिष्क का अधिक रचनात्मक प्रयोग हालात को बदलने, आमूलचूल परिवर्तन के लिये आवश्यक, लगता है।■

मारुति सुजुकी मानेसर डायरी (5)

✱ 45 सैकेण्ड में एक कार बनाने के स्थान पर कम्पनी ने मानेसर फैक्ट्री में अब एक मिनट में एक कार बनाना निर्धारित किया है।

✱ पुलिसवाले अब फैक्ट्री में नहीं हैं।

(बाकी पेज तीन पर)

अनुभव और विचार

25 वर्ष सरकारी उद्यम में नौकरी कर चुका, आन्दोलनों में नेतृत्वकारी भूमिका निभा चुका पूर्व-कर्मचारी : सर्विस के दौरान मेरा मजदूर आन्दोलनों से गहरा सम्बन्ध रहा है। मेरा अन्दाजा है कि एक मनोरोग मैनेजमेन्ट में सदैव विद्यमान रहता है। नेगेटिव निर्णय लेना, उल्टा करना मैनेजमेन्ट के चरित्र में ही होता है। रियेक्शन-प्रतिक्रिया में ऐसा ही होता है। मैनेजमेन्ट न चाहने वाली बात को बिना देरी प्रदान करती है। चाहने वाली बातों को मैनेजमेन्ट लटका देती है। बिजली बोर्ड के चेयरमैन को हम हटवाना चाहते थे और इसके लिये हम ने उस चेयरमैन का कार्यकाल बढाने के लिये आन्दोलन किया...... हरियाणा सरकार ने उक्त विवादित चेयरमैन को तुरन्त हटा दिया। हम वेतनमानों में बढोतरी चाहते थे और हम ने पदोन्नति, रिक्तियाँ भरने, नये पद सृजित करने आदि माँगों के लिये आन्दोलन आरम्भ किया. .. मैनेजमेन्ट ने वेतनमानों में बढोतरी तुरन्त कर दी और पदोन्नति आदि माँगों के लिये नीति बनाना बहुत समय बाद स्वीकार किया, पॉलिसी तो बहुत लम्बे समय के बाद जारी की गई। एक और मजेदार बात : हमारे दो साथियों का स्थानान्तरण मैनेजमेन्ट ने मुख्यालय से फील्ड में किया था। हम उन के ट्रान्सफर को रद्द कराना चाहते थे। हम ने तीन अन्य कर्मचारियों के स्थानान्तरण और करने के लिये आन्दोलन किया "ताकि मुख्यालय पर मैनेजमेन्ट के दलाल खत्म हो सकें"...... आननफानन में मैनेजमेन्ट ने उन दो साथियों का ट्रान्सफर रद्द कर दिया। खूब मजा आया।

दूसरा पहलू : हर नेता अपने समय में सफलतम इतिहास देखना चाहता है। और, इतिहास को रचने के लिये आन्दोलन व संघर्ष अपरिहार्य हो जाता है चाहे कर्मचारियों की माँग हों ही नहीं। माँगों को बना कर उनकी आवश्यकता बताई जाती है और एक भूमिका के तहत संघर्ष के पथ पर लाया जाता है...... माँगों का ज्ञापन चाहे मजदूर वर्ग में हो, चाहे किसान वर्ग में हो, चाहे व्यापारी वर्ग में हो, यानी, जीवन के किसी वर्ग-क्षेत्र में भी हो, ऐसी मुख्य माँगों का सब से पहला उद्देश्य जमीनी नेतागिरी हासिल करना, अप्रत्यक्ष में सरकार व मैनेजमेन्ट की मदद करना तथा कुछ को उत्पीड़ित करवा कर उन लोगों को अपने जाल में फँसाये रखना अधिक होता है। चोरी से, बेइमानी से, ईमानदारी से लड़ कर भी माँगों की उपलब्धि सम्भव नहीं है। नेताओं की वजह से फेल..... जबकि व्यवस्था की असफलता का समाधान जरूरी है। माँगों के ज्ञापन वाली स्थिति को आज के युग में समझना व टालना जरूरी है।■

महीने में एक बार छापते हैं, 10,000 प्रतियाँ निशुल्क बाँटने का प्रयास करते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें। अन्यथा भी, चर्चाओं के लिए समय निकालें।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे0 के0 आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया। RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73/12-14